गीतकार

महेन्द्र कुमार सिंह 'नीलम'

सनेसा

(भोजपुरी–गीत संग्रह)

गीतकार

महेन्द्र कुमार सिंह 'नीलम'

सादर समर्पित

विद्वान, मनीषी, लेखक, कथाकार, गीतकार, कवि, संगीतज्ञ, गायक, नाटककार, वादक और भोजपुरी के प्रति अगाध प्रेम रखने वाले राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्तियों को

मुक्तक

चाहे कतहूँ रहीं, गीत गावत रहब,
अपने माई क, करजा चुकावत रहब,
दर्द गऊँवा क, जब जब सताई हमें,
ओके, लिख लिख सनेसा पठावत रहब।

''नीलम''

प्रेरणास्त्रोत-

सर्व श्री प्रो0 शुकदेव सिंह
कबीर साहित्य मर्मज्ञ,
वाराणसी।

डॉ0 जितेन्द्रनाथ मिश्र
हिन्दी विभागाध्यक्ष
डी0ए0वी0 कॉलेज,
वाराणसी।

डॉ0 रामसुधार सिंह
हिन्दी विभागाध्यक्ष
यू0पी0 कॉलेज,
वाराणसी।

प्रोत्साहन एवं सम्बल-

हमारे वरिष्ठ भ्राता - ठाकुर महेश्वरनाथ सिंह

कनिष्ठ भ्राता - ठाकुर महेशप्रताप सिंह

पत्नी - श्रीमती विमला सिंह

पुत्र - नवीन कुमार सिंह, प्रवीन कुमार सिंह,
सुनील कुमार सिंह, गगन कुमार सिंह

तथा

परिवार के अन्य सदस्य

अपनी बात

कहीं सुना या पढ़ा है, मेरे मस्तिष्क में एक झलक है कि जब ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की तो अनेकों प्रकार के जीवों की रचना कर दी और उन्हें जीवित रहने के लिए साँस प्रदान कर दिया। साँस मिल जाने के कारण जीव जीवित हो गए पर गतिशील नहीं हो सके। यह देखकर देवताओं को कष्ट हुआ और वे सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा जी के पास जाकर निवेदन करने लगे प्रभो! आपने तो सृष्टि की रचना करके बड़ा ही उपकार किया। जीवों को साँस प्रदान कर सृष्टि को अभय वरदान दिया, किन्तु दुःख इस बात का है कि समस्त जीव आपकी कृपा से जीवित तो हैं पर उनमें गतिशक्ति नहीं है इस कारण सभी उदास एवं एक स्थान पर स्थिर रहते हैं यदि उनमें ऊर्जा, चेतना और शक्ति भर दें तथाबोलने के लिए वाणी प्रदान कर दें तो सृष्टि में एक नया उल्लास, चेतना और नव-जीवन आ जायेगा। ब्रह्माजी ने देवताओं के इस सुझाव से प्रसन्न होकर ऐसी ही किया। कालान्तर में सृष्टि झूम उठी और चारों तरफ मनोहारी वातावरण बन गया, समस्त जीवों में चलने-फिरने और बोलने की शक्ति आ गयी। प्रकृति गुनगुना उठी। विभिन्न स्वर संगीतात्मक हो गए। जीव अपनी-अपनीटोली बनाकर सांकेतिक बोली बोलने लगे, चूँकि सभी जातियाँ जैसे पहाड़ नदी, वृक्ष, सागर तथा इनकी छत्र-छाया में निवास करने वाले पशु-पक्षी, जल-थल में विराजमान जीव जन्तु अपने समूह में अपनी बोली बोलने और संकेतों के द्वारा अपनी भावनाओं को व्यक्त करने लगे, इनके मुखारबिन्दु से निकलने वाली बोली में संगीत भर गया। इस तरह से जीवों में जीवन का चमत्कारिक संचार हो गया, मानव भी इससे अछूता नहीं रहा। प्रकृति के साथ रागात्मक सामंजस्य हो गया और मानव जिस क्षेत्र में जन्म लिया वहीं अपना समाज बनाकर अपनी सांकेतिक बोली के द्वारा अपनी भावनाओं को व्यक्त करने लगा। इस प्रकार से दैनिक जीवन के साथ-साथ अपने आमोद, प्रमोद के लिए स्वर एवं वाणी के माध्यम से गुनगुना कर प्रसन्न एवं प्रफुल्लित रहने लगा। अपने मन की शान्ति एवं सुख के लिए विभिन्न प्रकार के क्रिया-कलापों एवं उत्सवों के द्वारा सामाजिक गठ-बन्धन स्थापित किया। इस तरह से बोलियों में संगीत का विशेष प्रादुर्भाव

हुआ जो आनन्ददायी और स्थायी हो गया। आज हम जो लोक वाणी के द्वारा लोक गीतों को सुनते हैं वह सामाजिक देन है। मानव के हर क्षेत्र में बोलियों के अलग-अलग लोक गीत एवं उनकी धुनें हैं। इन बोलियों में पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार में बोली जाने वाली बोली एक भोजपुरी है, जो अन्य बोलियों से कहीं अधिक प्रभावशाली और चर्चित है इसका प्रसार बिहार प्रान्त के भोजपुर, छपरा, सिवान, मुजफ्फरपुर, आरा, बलिया, गोरखपुर, गाजीपुर, देवरिया, वाराणसी, मिर्जापुर आदि स्थानों में स्थापित हैं। विद्वानों ने इस बोली को चार भागों में इसलिए विभक्त कर दिया, क्योंकि इनमें इन क्षेत्रों में थोड़ा अन्तर है। यह बोली भोजपुरी, काशिका, बल्लिका एवं मल्लिका के नाम से अलग-अलग क्षेत्रों में बोली जाती है तथा लोक-गीतों में थोड़ा-थोड़ा अन्तर आता है। इसबोली को शसक्त और उन्नतिशील बनाने में इस क्षेत्र के विद्वानों, कवियों व लेखकों ने बड़ा परिश्रम किया। उदाहरणार्थ स्व० पं० रामनरेश त्रिपाठी,कृष्णदेव उपाध्याय गाँव-गाँव में घूम-घूमकर लोकोक्तियों, लोक मुहावरे, परम्परागत गीतों का संकलन करके बहुत बड़ा योगदान दिया जो भुलाया नहीं जा सकता। प्रो० शुकदेव सिंह, श्रद्धेय हृदयेश नारायण राय, स्व० हजारी प्रसाद द्विवेदी, उदयनारायण तिवारी, श्रीमन्न द्विवेदी, आचार्य परशुराम चतुर्वेदी का भी योगदान भुलाया नहीं जा सकता है।

कवियों में महेन्द्र मिश्र (छपरा), भिखारी ठाकुर, पं० राम विचार पाण्डे (बलिया), द्वारिका प्रसाद सिंह (भोजपुर) मोती बी०ए०, अनुरागी (देवरिया) अनजान, चतुरी चाचा, भोलानाथ गहमरी, पं० चन्द्रशेखर मिश्र, विवेकी राय, अभयनाथ तिवारी, हरिराम द्विवेदी, राहगीर, नन्दन, बावला, मनज, सिपाही पाण्डे मनमौजी, मुखिया, चकाचक, कपिलमुनि पंकज, कुबेरनाथ रसिक, जितेन्द्र सिंह जीत, आदि अनान्य कवियों लेखकों ने भोजपुरी को समृद्धि बनाया। जाने-अनजाने बहुत सारे कवियों लेखकों तथा भोजपुरी प्रेमियों ने बड़े-बड़े समारोह करके देश में इस बोली को स्थापित करने में योगदान दिया और इस बोली को मारीशस, सूरी, अण्डमान, निकोबार, वर्मा आदि देशों में स्थापित किया और इस क्षेत्र के समस्त रीति-रिवाज को कामय रखा। चल-चित्र, नाटक, नौटंकी, बिरहा के माध्यम से भी भोजपुरी को काफी हद तक सफलता मिली। आज मैं इस दावे के साथ कह सकता हूँ कि भोजपुरी का प्रचार और प्रसार अन्य बोलियों जैसे, अवधी, मागधी, कनड्ड, मलयालम, गुरुमुखी, ब्रज आदि से अधिक है और लोकप्रिय भी है, विदेसिया, नई की पीढ़ी, माटी जागल, लागे न अचंरा में दाग, वीर कुवंर सिंह आदि नाटकों ने लोगों के मन पर अमिट छाप छोड़ा। इस बोली को भाषा रूप में स्थापित करने में सभी माध्यम अत्यन्त प्रभावशाली रहे। संगीतकारों में स्व० एन०एन० त्रिपाठी, नौशाद, रवि व मदनमोहन

चित्रगुप्त आदि ने मोहक संगीत देकर भोजपुरी गीतों को ऊँचाई प्रदान की और सुजीत कुमार, हीरालाल, नाजिर हुसैन, लीला मिश्रा सफल अभिनय करके फिल्म जगत में धूम मचा दी। स्व० डॉ० स्वामीनाथ सिंह, हजारी प्रसाद द्विवेदी, ईश्वर चंद सिन्हा, मोहनलाल गुप्त (भैय्याजी बनारसी) ने समाचार पत्रों के माध्यम से भोजपुरी के उत्थान के लिए बड़ा योगदान दिया। भोजपुरी को जनप्रिय बनाने में इन लोगों ने अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन पटना, कलकत्ता, बम्वई, इलाहाबाद, गोरखपुर, देवरिया, वाराणसी आदि स्थानों पर विशाल जनसमूह एवं भोजपुरी भाषा-भाषियों के बीच, नाटक, कवि सम्मेलन, संगीत सम्मेलन करके जनप्रिय बनाया। राजा रजवाड़ों, तालुकेदारों, जमींदारों-रइसों ने अपना अमूल्य योगदान दिया तथा गायिका स्व० रसूलनवाई, स्व० सिद्धेश्वरीवाई, स्० मैना एवं श्रीमती गिरिजा देवी ने अपने स्वरों से भोजपुरी को शिखर पर पहुँचाया। साथ ही गायक रविशंकर, ओ३मप्रकाश सिंह, मुकेश सुनील सिंह, सरोज वर्मा, महुवा बनर्जी, शारदा सिन्हा, कल्पना आदि जिनके तमाम कैसेट बाजार में आए हैं, इस भाषा की अभिवृद्धि कर रहे हैं। भोजपुरी की पत्रिकाएँ, खण्डकाव्य और गीत- सग्रह भी धड़ाधड़ समाज में आने लगे। आकाशवाणी इलाहाबाद, पटना से हास्य नाटक रामेश्वर सिंह कश्यप (लोहा सिंह) तथा नर्वदेश्वर उपाध्याय ने अथक परिश्रम करके आकाशवाणी द्वारा जनमानस में भोजपुरी के लिए रस वर्षा कर दी। उस्ताद बिस्मिल्लाह खान, गुदई महराज, पं० किशन महाराज ने अपना तन-मन समर्पित करके भोजपुरी को उच्चतम शिखर पर पहुँचाया। बिरहा गायक हीरा, गुल्लू, श्यामदेव ने बड़े-बड़े कथानक को भोजपुरी में गाया। आज भोजपुरी का स्थान अन्य लोक भाषाओं में अग्रगणीय है किन्तु अभी इस बोली और भाषा के लिए व्याकरण का समुचित स्वरूप नहीं आ सका, यों तो भोजपुरी में काफी परिमार्जन हुआ है लेकिन अभी बहुत कुछ बाकी है।

मैं तो मूलतः हिन्दी गीतकार हूँ। गीतों के माध्यम से मेरी पहिचान, आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं अखिल भारतीय कवि-सम्मेलनों में बनी। प्रयाग में सन् १९५० से लेकर १९७० तक रहा। इस अवधि में छायावाद के मूर्धन्य कवि-साहित्यकारों (महाप्राण निराला, महादेवी वर्मा, सुमित्रा नन्दनपंत, रामकुमार वर्मा) के चरणों में बैठने, सुनने, गुनने और लिखने पढ़ने की प्रेरणा मिली। ठा० कमलाशंकर सिंह एवं निराला जी का मैं प्रिय शिष्य बन पाया। इन लोगों के उत्साह-बर्धन से मैं लेखनी और तूलिका पकड़कर काव्य सृजन एवं चित्र-सृजन करने लगा। जिला गाजीपुर उत्तर प्रदेश में सन् १९३२ में मेरा जन्म एक कुलीन राजपूत परिवार हुआ। मेरे पिता स्व० ठा० रघुवीर चन्द्र सिंह साहित्य एवं कला प्रेमी रहे उनकी छाप बचपन से ही मेरे ऊपर पड़ी। मेरे बचपन को यहाँ की माटी, जल, वायु तथा भौगोलिक, सामाजिक परिस्थितियों ने रोम-रोम में धार्मिक

संस्कार, सामाजिक, रीति-रिवाज कूट-कूट कर भर दिया। भोजपुरी की मिठास और अन्तर मन को छूने वाली गतिविधियों ने मुझे झकझोर दिया। बचपन में जब गाँव या शहर में उत्सव, नाच, गाना, बिरहा, नाटक, नौंटकी होता था तो प्रायः देखने जाता था, भोजपुरी की यह शैली, बूढ़े, जवान, नर, नारी बालकों के मानस पटल पर छा जाती थी। लोग मंत्रमुग्ध होकर सारी-सारी रात भाव-विभोर होकर आनन्द लेते थे। पूर्वांचल में होने वाले प्रतिदिन कोई न कोई उत्सव जन्म, विवाह, पूजन-पाठ, देवी-देवताओं की मनौती, ग्रामीण मेले में गायन वादन होता ही रहता है। यह अटूट आस्था और विश्वास देखना हो तो गाँव में जाना ही पड़ेगा। इन सब संस्कारों का प्रभाव मेरे मानस पटल पर आज भी विद्यमान है। यहाँ विरहा, चैती, चैता, फाग, कजरी, देवी गीत, विवाह गीत, लोरी, संयोग वियोग के गीत आदि की धुनें अत्यन्त कर्ण प्रिय एवं हृदयग्राही हैं। भोजपुरी फिल्मों में इन धुनों का सटीक उपयोग किया गया तथा विदेसिया, गंगा मईया तोहें पियरी चढ़इबों, बलम परदेसिया आदि में स्व० एन०एन० त्रिपाठी, नौशाद चित्रगुप्त आदि संगीतकारों ने बड़ी मार्मिकता के साथ संगीत दिया है और देखते-देखते तमाम भोजपुरी फिल्मों की बाढ़ आ गयी।

इस प्रभाव एवं श्री वृद्धि को देखते हुए मैंने अपना कर्म और कर्त्तव्य समझा कि इस माटी का ऋण अपने मौलिक सुमधुर गीतों से चुका सकूँ, तो मेरा जीवन भी सफल हो जायेगा। हाँलाकि मैंने बहुत अधिक तो नहीं लिखा है और न मुझे बहुत-धुनों का ज्ञान है फिर गुन-गुनाकर अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में बड़ा सुख इस पुस्तक ''सनेसा'' भोजपुरी-गीत संग्रह से मिला है। आज भोजपुरी को ऊँचाई देने में युवा कलाकारों ने बड़ा योगदान दिया है और दे रहे हैं, इनमें बहुचर्चित नाम श्री मनोज तिवारी 'मृदुल' का समस्त भोजपुरी जगत में विख्यात है, जो फिल्मों, मंच तथा 'फोक जलवा' के द्वारा भोजपुरी गीत एवं गायकों को प्रोत्साहन दे रहे हैं तथा अपने जीवन को भोजपुरी के लिए समर्पित करचुके हैं। उनको सुनने और देखने के लिए लोग पागल रहते हैं। इनकी तपस्या, साधना ने देश के बाहर भी डंका बजाया है। ज़ाने-अनजानें बहुत से नामी गिरामी विद्वान, कवि, लेखक, नाटककारों में नाम इस पुस्तक में छूट रहे हैं, मैं उन्हें भी प्रणाम करता हूँ।

यह पुस्तक ''सनेसा'' भोजपुरी-गीत संग्रह आपके हाथों सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष है, आशा है इसे पढ़कर आपका आशीर्वाद प्राप्त होगा। इसी विश्वास के साथ आपका अपना......

वरिष्ठ गीतकार एवं चित्रकार
महेन्द्र कुमार सिंह ''नीलम''
काशीरत्न

भोजपुरी गीत

(१)

गीत

हाथ जोड़े बिनती करीं मोरी माई
तोहरी दुअरिया।।

आरती उतारे आई पूरबी किरिनिया,
रात रात नाचे ले, चाना कऽ चननियाँ,
बेनिया डोलावे गंग–लहरिया हे माई
तोरी दुअरिया।। ....

कोई फल–फूल, कोई माला चढ़ावे,
कोई अपने मनवा कऽ दियना जरावे,
कोई चढ़ावे चुनरिया हे माई
आई के कगरिया।। ....

तोहरे दरस पाई, पाप मिट जाला,
दुख भाग जाला, अइसन सगरे कहाला,
मेटि दीहअ हमरो दरदिया हे माई
अपनी दुअरिया।। ....

हम तऽ भिखारी, अइलिन तोहरी दुआरी
दुखवा सब हर लीहा मोरी महतारी,
दया कऽ करिहा नजरिया हे माई
अपनी दुअरिया।। ....

(२)

गीत

चइते के उतरल अंजोरिया हो रामा
अपने अंगनवा।।
ठुमुक ठुमुक नाचे ले,
आई के चननियाँ,
अगंना में रहि रहि
बाजे पयजनियाँ,
पिया खातिर बेकल
परनवा हो रामा
अपने अंगनवा।।

रहि रहि गमकेला
अब तऽ गुलबवा,
घुमरी करेला आई
लोभी भंवरवा,
रतिया जगावे
सपनवा हो रामा
अपने अंगनवा।।

गम गम महके ला
अमवा की बगिया,
महुआ कऽ फूलवा
सतावे दिन रतिया,
बैरी लागे हाथ कऽ कंगनवा हो रामा
अपने अंगनवा।।

❋❋❋

(३)

गीत

जबसे पिया परदेसवा में छवलन
सुधियो न लिहलन मोर,
सुधियो न लिहलन मोर।। ....

कइसे जरेला ओनकर
दियरा कऽ बाती,
पतियो न लिखलन थोर, सखी
सुधियो न लिहलन मोर।। ....

सून रे अगनवां, अंटरिया न भावे मोहे
लागे दुआरी जस चोर, सखी
सुधियो न लिहलन मोर।। ....

अन्न, जल, अऊर सिंगार नाही भावे मोहे
देहियां झुराए जस धनवा कऽ पोर, सखी
सुधियो न लिहलन मोर।। ....

कागा दहीजरा के लजियो न लागे देखा
बईठे ना बड़ेरवन मोर, सखी
सुधियो न लिहलन मोर।। ....

धुआँ लागे ओरमल बदरबा जे आइल बाड़न
छूछे मचावलन सोर, सखी
सुधियो न लिहलन मोर।। ....

चुरुआ भरि पनियाँ में चाना तूहूँ बूड़ जइता,
देला ना सनेसा ओनके मोर, सखी
सुधियो नं लिहलन मोर।। ....

(४)

गीत

जब जब बाजे बंसुरिया
मनवा पागल करे।।

जब जब जाईं, हम पनियाँ भरन के,
या मन्दिरवा में, जब दरसन के,
तब तब बाजे बंसुरिया
मनवा पागल करे।।

जब जब जाईं, हम खेत खरिहनवा,
गत्ते से छू देला, फगुनी पवनवा,
तब तब बाजे बंसुरिया
मनवा पागल करे।।

जब जब जाईं हम, नदिया किनारे,
तुलसी के नीचे, जब दियना के बारे,
तब तब बाजे बंसुरिया
मनवा पागल करे।।

जब जब उतर ले, अगंना चननियाँ,
चुपके से पहिनी हो, जब पयजनियाँ
तब तब बाजे बंसुरिया
मनवा पागल करे।।

जब जब जाईं हम, फुलवा लेआवे,
अखियाँ में कजरा, या सेजिया बिछावे,
तब तब बाजे बंसुरिया
मनवा पागल करे।।

(५)

गीत

कईसन आइल जमनवा
सुना हो पिया।
बेचि दिइला झूलनी, कगंनवा
सुना हो पिया।।

भुखिया, पियसिया में दिनवा ओराला,
रतिया में चिन्ता से कुछ ना सूझाला,
लोरवे में बूड़ल बिहनवा,
सुना हो पिया
कईसन आइल जमनवा
सुना हो पिया।।

हंसी, खुशी घरवा में कब हमरे आई,
आल्हर उमिरिया ई कब गदराई,
कब हंसी आपन अंगनवा,
सुना हो पिया।

खटत, खटत सारी जिनिगिया ओराइल,
छतिया में दुखवा कऽ घाव ना भराइल,
रोवेला रात दिन सपनवा,
सुना हो पिया
कईसन आइल जमनवा,
सुना हो पिया।।

अब धरम जतिया कऽ लागल अगिनिया,
गऊँवा में नेहियाँ कऽ बूड़ल किरिनिया,
केहू न माने कहनवा सुना हो पिया
कईसन आईल जमनवा सुना हो पिया।।

(६)

गीत

जवन जिनगी इ मिलल उधार में,
पिया! लुट गइलीं तोहरे पियार में।।

अईसन तोहार बा
मोहनी मुरतिया,
अलगां तूँ बाड़ा हज़ार में।
पिया लूट गईलीं
तोहरे पियार में।। ....

तोहरा के देखि मोर सुधबुध
बिकाइल,
अँखिया लड़ल जब बजार में।
पिया लुट गईलीं
तोहरे पियार में।। ....

लागल पिरितिया की
अईसन अगिनिया,
घाम लागे जईसे
कुआर में।
पिया लुट गईलीं
तोहरे पियार में।। ....

मनवा के ढ़ाढ़स
देवे के खातिर,
चिचड़ी के खीचीं
देवार में।
पिया लुट गईलीं
तोहरे पियार में।। ....

(७)

गीत

गरमी के अवते, किरिन जरावे लीं
मनवा कऽ बैर काढ़े
सूरुज निरमोहिया।। .... गरमी के अवते

भुईयाँ कऽ अंग अंग,
रहि रहि तलफेला,
लुहिया कऽ बान मारे
पछुआ बयरिया।। .... गरमी के अवते

बदरा के खातिर ऊपराँ
विरही अकास रोवे,
पनियाँ के खातिर तरवाँ
भुइयाँ पियास रोवे,
आवा, आवा, आवा परदेसी
हे बदरा तूँ
कहवाँ तूँ भूल गइला
अपनी डहरिया।। .... गरमी के अवते

रेतिया के कोराँ लिहले
नदिया हो सिसकेले,
तलवा में बईठे खातिर
चिरई हो झिझकेले,
ताल अऊर पोखरी कऽ
देहियाँ झुराइल
कि फाटल कछारेके
हियरा दररिया।। .... गरमी के अवते

अंगना में बछरू रोवे
दुअरे पर गईया,
खोतवन से झाँकि झाँकि
रोवे ले चिरइया,
कईसे पियास बूझी
सून बा गगरिया।। .... गरमी के अवते

अगँना में आन्ही अऊर
बहराँ तुफनवा,
साँसत में जिनगी
अऊर हांके परनवा,
अब तऽ पहाड़ लागे
जेठ दुपहरिया।। .... गरमी के अवते

गाँछी गाँछी छिपत फिरे
नन्हकी चिरइया,
पछुवा के डरे
नाहीं बहे पुरवइया,
गोरिया कऽ लहरे ना
रहि रहि चुनरिया।। .... गरमी के अवते

(८)
गीत

पुरब में देखि के बदरिया
बदरा नाचे लगल।।

दादुर गावे, पपीहरा गावे,
मोरनी से ठोरवा
मोरवा मिलावे,
देखि देखि इनकर पिरितिया
बदरा नाचे लगल।। ....

अमवा की डारी पर
झूला परल बा,
सावन में सखियन
के मस्ती चढ़लबा,
जब जब लचके कमरिया,
बदरा नाचे लगल।। ....

छम छम छमकेले
बुनियाँ कऽ पायल,
बिरही के मनवा के
कर देला घायल,
माथे पर देखिके गगरिया,
बदरा नाचे लगल।। ....

गोरिया के अँखिया
कऽ कजरा बुलावे,
आधी आधी रतिया
के सपना सतावे,
ढहके ले जब जब सेजरिया,
बदरा नाचे लगल।। ....

रतिया में झिंगुरा जब
बंसी बजावे,
बेलवा हो हँसि हँसिके
गन्ध फइलावे,
रतिया में सुन के कजरिया,
बदरा नाचे लगल।। ....

(९)

गीत

पिया तोरे बिना सून लागे
मोर अगँना,
भईल मनवा कऽ मोर
अब उदास सुगना।।

अखियां लोरवा बहावे,
कजरा रहि रहि बीरावे,
कैसे बतिया बताई
इहाँ संग केहू ना।।
भईल मनवा कऽ मोर
अब उदास सुगना।। ....

ललकी चूड़िया न बोले,
भेद बिछुआ न खोले,
अब तऽ ठेना मारे
हथवा कऽ मोर कंगना।।
भईल मनवा कऽ मोर
अब उदास सुगना।। ....

पाती लिखे नाहीं आवे,
अन्न, जल, नाही भावे,
कईसे तोहके बुलाईं
हमें आवे ढ़ग ना।।
भईल मनवा कऽ मोर
अब उदास सुगना।। ....

(१०)

गीत

गंगा जी, हे गंगा जी
अइसन बा तोहरी कहनियाँ।।

निकल कमण्डल से ब्रह्माके
शंकर जटा समइलू,
साठ हजार पूतन के तारे
संग भगीरथ धइलू,
गंगाजी, हे गंगा जी
अईसन बा तोहरी चरनियाँ।। .....

तोहरे दरसन से पापी के
सभे पाप मिट जाला,
रोग, शोक, संताप मिटेला
जग में इहे कहाला,
गंगा जी, हे गंगा जी
जे आइल तोहरी सरनिया।। ....

तोहरे दुअरे माथ नवा के
जे कुछ तोहसे माँगे,
ओकरे अँचरा के भरले में
तनिक देर ना लागे,
गंगा जी, हे गंगा जी
दुनियाँ करेले बखनियाँ।। ....

हम मूरख, अज्ञानी अईसन
कइली तोहके गंदा,
रौ रौ नरक के भोगे खातिर
गरे में डलली फदाँ,
गंगा जी, हे गंगा जी
अधम हमार चलनियाँ।। ....

(११)

गीत

अब नाहीं फूले गुलबवा हो रामा
हमरी नगरिया।।

खेत, खरिहनवा, उदास होई गईलन,
रसिया भंवरवा, कहाँ उड़ि गईलन,
गमके ना अगंना दुअरिया हो रामा
हमरी नगरिया।। ....

उजरल बगिया, उजर गइलन माली,
हेराई गइलन फुलवा, हेराई गईलिन लाली,
केकर लागल नजरिया हो रामा
हमरी नगरिया।। ....

अइलन मदन जब, धनुहिया के लिहले,
भर गऊवाँ घूमलें हो मुँह लटकवले,
सुसकेलें भरि दुपहरिया से रामा
गऊँवा कगरिया।।...............

नाहीं देखाला कहीं फुलवन कऽ गजरा,
हेरि हेरि सूख गइलन अँखियन कऽ कजरा,
सून लागे पिया कऽ सेजरिया हो रामा
हमरी नगरिया।। ....

(१२)

गीत

घेंरि आइल सगरे बदरिया
ए हे पिया सावन में।
घायल करे तोहरी नजरिया,
ए हे पिया सावन में।।

कइसे झूला झूले जाईं,
कवनों रस्ता नाहीं पाईं,
लोगवा रोके मोर
रहि रहि डगरिया,
ए हे पिया सावन में।। ....

पड़े सावन कऽ फुहार,
जीयल भइल दुसवार,
बैरी भइल आजु
पुरुवा बयरिया,
ए हे पिया सावन में।। ....

रहि रहि कजरा सतावे,
चुनरी अगिया लगावे,
कइसे बइठीं चढ़ि
अपनी अंटरिया,
ए हे पिया सावन में।। ....

(१३)

गीत

चिरई इ बतिया बताई गइल
होली, होली में,
होली होली में।।

जब से मदन आई
चढ़लन कपारे,
बाढ़ल नसा जे
न उतरे उतारे,
ऊँच नीच सब कुछ
भुलाई गइल।।
होली होली में।। ....

अंग अंग सबकर
अब रंग से रंगाइल,
बलमा के कनखी से
गोरिया लजाईल,
घुंघटा में झटसे
लुकाई गइल
होली होली में।। ......

गऊँवा–सहरिया में
होरी हुरंदंग बा,
चोला भी मस्त बा
चोली भी मस्त बा,
बूढ़ऊ कऽ मतिया
मराइ गईल
होली होली में।। ......

आइ के अंगनवा में,
अईसन कुछ कइलन,
कोराँ में भऊजी के
भईया उठवलन,
झटके में चोलिया
नोचाई गइल,
होली–होली में।। ....

(१४)

गीत

ले दां हमके चुनरिया
ए हे पिया
ले दा हमके चुनरिया।।

चुनरी पहिरि हम, खेते में जाईब,
हिल-मिल के दूनी, फसिलिया उगाइब,
सुखी होइ गऊँवा सहरिया ए हे पिया
ले दा हमके चुनरिया
ले दा हमके चुनरिया।।

चुनरी पहिरि हम बान्ह बनाइब,
गऊँवा सहरिया तक रस्ता देखाइब,
मिल जईहें गऊँवा सहरिया ए हे पिया
ले दा हमके चुनरिया
ले दा हमके चुनरिया।।

चुनरी पहिरि हम बिजली बुलाइब
गऊँवा से अपने अन्हरिया भगाइब,
चम चम चमकी दुअरिया ए हे पिया
ले दा हमके चुनरिया
ले दा हमके चुनरिया।।

चुनरी पहिरि करखाने में जाइब,
देसवा के खातिर बनूखिया बनाइब,
लड़िहन वीरन सिपहिया ए हे पिया
ले दा हमके चुनरिया
ले दा हमके चुनरिया।।

(१५)

गीत

आजु मोरे अगंना में घेरलस
फेरु से बदरिया नू रे सखी,
मारे ले विरह कऽ बान कि
पूरुबी बयरिया नू रे सखी,

नाचे ले झिमिर झिमिर बुनियाँ
धरती के अंगना नू रे सखी,
हम हत-भागिनि अईसन
मिटे अब दरदिया नू रे सखी,
मारे ले विरह कऽ बान कि
पूरबी बयरिया नू रे सखी।।

सूखि गईलन बेलवा कऽ फूल,
कि रोवेलीं चमेलिया नू रे सखी
पिया बिन रहि रहि डहकेले
आजु मोर सेजरिया नू रे सखी
मारे ले विरह कऽ बान कि
पूरबी बयरिया नू रे सखी।।

बहि गईलन अँखिया कऽ कजरा
कि रोवेले टिकुलिया नू रे सखी
पिया बिनु बोले न कगंना
उदासलन नजरिया नू रे सखी।। ......

(१६)

गीत

दुनियाँ कऽ बिगरल ईमान, सुगनवा उड़ि के चला।
जहाँ बसलन हमार भगवान, सुगनवा उड़िके चला।।

रात अन्हरिया
न सूझे डहरिया,
लोरवे में बूड़ल बिहान,
सुगनवा उड़ि के चला।
जहाँ बसलन हमार भगवान
सुगनवा उड़ि के चला।।

भुखिया, पियसिया से
सूखल ठठरिया,
जिनगी भईल बेजान,
सुगनवा उड़ि के चला।
जहाँ बसलन हमार भगवान
सुगनवा उड़ि के चला।।

केहू ना केहू के
अब पहिचाने,
मनवा में ढूकल सैतान,
सुगनवा उड़ि के चला
जहाँ बसलन हमार भगवान
सुगनवा उड़ि के चला।।

के से बताई हम दुखवा
की बतिया,
सभे भयल बेईमान,
सुगनवा उड़ि के चला
जहाँ बसलन हमार भगवान
सुगनवा उड़ि के चला।।

(१७)

गीत

रहि रहि बोले सुगनवा हो रामा
हमरे अँगनवा।।

फागुन रितु, मद मातल आइल,
भुईया कऽ अंग अंग अब पियराइल,
मातल ऐही में जहनवाँ हो रामा
हमरे सीवनवा।।

दुअरे पर अमवा कऽ मन बऊराइल,
भोरहीं में महुआ कऽ फूल छितराईल,
छुई छुई गमके पवनवा हो रामा
हमरे अँगनवा।।

रहि रहि खुलि जाला, बान्हल अंचरवा,
अँखियन में बिहँसेला, पारल कजरवा,
खन खन खनके कंगना हो रामा,
कवने करनवा।।
रहि रहि बोले सुगनवा हो रामा
हमरे अँगनवा।।

(१८)

गीत

रहि रहि डहकेला मोर हो परनवा
सुना हो सजनवा।।

चिचड़ी खिचत मोर जिनगी ओराइल,
धाने के पोर जस देहियाँ झुराइल,
रहेला उदास रात दिन मोर मनवा
सुना हो सजनवा।।

हमरा के देइ गईला, अईसन सुगनवा
जरिको न माने छोट मोट मोर कहनवा
काहे के लिआय अइला करके गवनवाँ
सुना हो सजनवा।

हमके डरावे, आइ साँवर बदरवा,
बहि जाला अँखियन से पारल कजरवा,
ताना मारे रहि रहि हमके सवनवा
सुनाहो सजनवा।।

जब जब आवे, मोरे अंगना फगुनवा,
हमके जरावे, रात रात भर सपनवा,
कागा दहीजरा न माने ला कहनवाँ
सुना हो सजनवा।।

(१९)

गीत

गोलिया बान्हि के चला,
टोलिया साजि के चला,
दियना बारि के चला,
जब जब दुअरे पर चढ़े हत्यार
गोलिया बान्हि के चला।।......

तूहें कसम बा भारत माँ
के लगे न अंचरा में दगिया,
तोहरे रहते कहीं न जारे
घर दुआर में लागल अगिया,
मँगिया धोआए नाहीं,
सेनुरा पोछाए नाहीं,
छोड़ि चदरिया उठा हो भईया
ल हाथे हथियार,
गोलिया बान्हि के चला।। ......

जवने देस के वीरन कऽई
दुनियाँ कहे कहानी,
चुटकी भर माटी के खातिर
भईल बहुत कुरबानी,
रचि के पगरी धरा,
देस दुखवा हरा,
दुसमन के छाती पर चढ़ि के
करा वार पर वार।।
गोलिया बान्हि के चला।। ....

चारों ओर देस पर घेरे
जब संकट कऽ बादर,
बन जा तूँ तूफान ओ घरी
जईसे हुँकारे सागर,
माई कऽ लाज बचावे खातिर
करिहा हर उपचार।।
गोलिया वान्हि के चला।। ....

(२०)

गीत

सावन की पड़ली फुहार
अगंना भींजे लागल,
बुनियाँ करे मनुहार,
अगनां भींजे लागल।।

भींजे चुनरिया हो
भींजे पयलिया,
भींजेलीं झूला पर
सखिया सहेलिया,
बलमा कऽ भींजे पियार
अंगना भींजे लागल।।

माथे की बिंदिंया
बुलावे कजरवा,
नाहीं नीक लागे अब
हमके गजरवा,
टगंना के दिहली उतार
सुगनवा भींजे लागल
सावन की पड़ली फुहार
अगंना भींजे लागलं।

(२१)

गीत

रहि रहि सतावे सपनवा हो रामा
चइते महिनवा।।

ताना मोहे मारे अब
माथे की टिकुलिया,
रहि रहि झनके ले
नाके की झुलनियां,
बड़ दुख देला कंगनवा हो रामा
चइते महिनवा।।

जब से फगुनवा कऽ
लागल नजरिया,
सून भईल काहे
मोरे पिया·कऽ सेजरिया
देवरा न माने
मोर कहनवां हो रामा
चईते महिनवा।।

चढ़ती जवनियां कमर
बल खाले,
छूते पवनवा के
चोली खुल जाले,
साँसत में परल
परनवा हो रामा
चईते महिनवा।।

(२२)
गीत

जागा जागा जागा मनुआ
होत बा सबेर हो।।

नाहीं केहू इहाँ भइया
संगऽ संघाती,

सपना के मेलवा के
सभे बा बराती,

केहू जाई आगा आगा
केहू के लागी देर हो,

जागा जागा जागा मनुआ
होत बा सबेर हो।। ....

एक दिन उड़िहें पंछी,
सब छूट जाइ,

तोहरे करमवा कऽ
जस रहि जाइ,

छोड़ दऽ चदरिया आपन
करा ना अबेर हो।। ....

(२३)
गीत

नाहीं कोई संगी तोरा
नाहीं कोई मितवा
चलाचल मनुआ रे,
बढ़ा चल मनुआ रे।। ....

कहीं तऽ बुलावे सांझ
कहीं तऽ सबेरा हो,
रहिया में पता नाहीं
कहाँ बा बसेरा हो,
चलाचल मनुआ रे,
बढ़ा चल मनुआ रे।। ....

कवने दिसा से अइला
कवने दिसा के जइबा,
पता नांही कहाँ जाके
आपन नगरिया पइबा।।
चलाचल मनुआ रे,
बढ़ा चल मनुआ रे।। ....

मिटल नाहीं जिनगी में
भूखवा पियसिया,
थाके लागल जिनगी,
पर मिलत ना विदेसिया,
चलाचल मनुआ रे,
बढ़ा चल मनुआ रे।। .....

आत्मकथा : बचपन से ही साहित्य, लोक साहित्य एवं चित्रकला के प्रति अग[illegible] एवं रूझान। देश के मूर्धन्य साहित्यकारों लेखकों कवियों द्वारा आशीर्वाद[illegible] प्रोत्साहन। गुरूवर निरालाजी, पंत जी, महादेवी वर्मा एवं राम कुमार जी के सान्निध्य में बैठने, लिखने एवं मार्ग दर्शन का सुअवसर। निरन्तर लेखन एवं चित्रकला में जीवन समर्पित।

जीवन परिचय

जन्म	: २५ अगस्त १९३२
शिक्षा	: एम.ए.
पिता	: स्व. डॉ. रघुवीर चन्द्र सिंह
मूल निवास	: मियाँपुरा, कोयला घाट, जनपद-गाजीपुर

काव्य एवं चित्रकला में उपाधियाँ एवं सम्मान

काव्य	: भोजपुरी नाटक - माटी जागल, लागे न अचरा में दाग, गीत संग्रह - जियरा बोले
	हिन्दी गीत संग्रह - धूल धुआँ, कुछ आग कुछ पानी, याद करोगे।
पुरूस्कार एवं सम्मान	: साहित्यिक संघ वाराणसी द्वारा सम्मान
	यू०पी० जर्नलिस्ट द्वारा काशी रत्न
	साहित्यिक संस्था काव्य गंगा द्वारा काव्य रत्न
	वाराणसी साहित्यकार साक्षात्कार में जीवन परिचय एवं उपलब्धियाँ
	नर्मदा सृजन सम्मान जबलपुर, रेल हिन्दी दिवस सम्मान दिल्ली आदि।